IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

भारत की विदेश नीतिः विश्लेषणात्मक अध्ययन

रेनू यादव, शोधार्थी, राजनीति विज्ञान,
एम.डी.यू. रोहतक। (हरियाणा)
रेनू यादव, अतिथि प्रोफसर,
आर0डी0एस0, कालेज, रेवाडी।

शोध संक्षेपः–

स्वतंत्र देश के रूप मे 1947 के बाद भारत न अपनी स्वतंत्र विदेश निति का संचालन शुरू किया। इसमें प्रमुख प्रवृत्तियो का विकास हुआ। वे शीत युद्ध से जुडी हुई थी। अंतरराष्ट्रीय सम्बन्धो के कारण बदलाव 1991, 1992 में उदारीकरण के बाद आरम्भ हुआ। जिसके कारण विदेश नीति में बदलाव आया। यह बदलाव पूर्ण रूप से नही था। बल्कि निरन्तर बना रहा। भारतीय विदेशनीति में पहले से ही उपस्थित है किन्तु वर्तमान में उनका स्वरूप बदलता है। इन्ही के आकलन का प्रयास है।

भूमिकाः–

इस शोध में हम भारत की विदेशी नीति के बारे में अध्ययन करेंगे। भारतीय विदेश नीति के निर्धरण में कई कारकों का प्रभाव रहा है और वर्तमान में भी प्रभावित कर रहे है। इनमें से कुछ कारको की प्रकृति स्थायी है, जबकि कुछ समय के साथ बदलते रहे है। इस भाग में हम भूगोल, इतिहास एवं सांस्कृतिक, आंतरिक स्थिति, बाह्य वातावरण आदि जैसे मुख्य भारतीय विदेश नीति–निर्धारकों का विश्लेषण करेंगे।

किसी भी राष्ट्र की विदेश नीति शून्य से उत्पन्न नहीं होती है। उस राष्ट्र का इतिहास और संस्कृति राजनीतिक व्यवस्था तथा अन्य तत्व उसे दिशा और स्वरूप प्रदान करते है। इनमें कुछ तत्व जैसे भूगोल एवं प्राकृतिक सीमाएं है जबकि अन्य आंतरिक और बाह्य पर्यावरण है।

भारतीय विदेश नीति का लक्ष्य राजनीतिक स्वतंत्रता एवं बाह्य सुरक्षा को प्रोत्साहित करने के संदर्भ में राष्ट्रीय हित की रक्षा एवं उसे बढ़ावा देना है। भारत जैसे राष्ट्र जिसने औपनिवेशिक शासन से स्वयं को स्वतंत्र किया हो स्वभावतः ऐसी विदेश नीति का पालन करेगा। भारत एक शांतिप्रिय देश है वह कभी भी यह नहीं

चाहता कि उसकी सुरक्षा से दूसरे राष्ट्र स्वयं को असुरक्षित महसूस करें। भारत हमेशा से ही सभी राष्ट्रों के समय मित्रतापूर्वक संबंध रखना चाहता है।

भारत लम्बे समय तक औपनिवेशक शासन से पीडित रहा है और लम्बे अंहिसक संघर्ष के बाद आजाद हुआ, की विदेश नीति उपनिवेशवाद को खत्म करने के लिए वचनबद्ध है। उसके बाद भारत ने अफ्रीका और एशिया की जनता के राष्ट्रीय संघर्ष का समर्थन किया है। भारत की इच्छा रही है कि उसकी विदेश नीति बिना भेदभाव, सभी लोगों और राष्ट्रों के समान अधिकार की प्राप्ति के लिए वचनबद्ध रहे। भारत ने दक्षिण अफ्रीका में फैली रंग–भेद की नीति का डटकर विरोध किया।

विदेश नीति के उद्देश्यः–

1. भारत की विदेश नीति विश्व शांति को प्रोत्साहन करती है।
2. इसका उद्देश्य राजनीति स्वतंत्राता एवं बाह्य सुरक्षा को प्रोत्साहित करना।
3. पड़ोसी देशों के साथ मित्रतापूर्वण व्यवहार करना।
4. भारत की एकता और अखण्डता को बनाए रखना।
5. न्याय संगत आर्थिक एवं सामाजिक विश्व–व्यवस्था की स्थापना हो सके।

भारत की विदेश नीति में साहित्य की समीक्षाः–

1. डूडी रामचन्द्र (5 मई 2022):– भारत की विदेश नीति गतिशील, निरन्तर कार्यशील रही है। 1947 से लेकर वर्तमान समय में भारत ने विदेश–नीति के क्षेत्रा में बड़ी उपलब्धियां प्राप्त की है। विदेश नीति की स्थापना व निर्माण के संदर्भ में भी कांग्रेस का योगदान महत्वपूर्ण था। प्रथम विश्व युद्ध के बाद कांग्रेस ने अत्यधिक सक्रीय भूमिका निभाना प्रारंभ कर दिया।
2. ओझा डॉ. शीला (17 नवंबर 2014):– विदेश नीति को प्रभावित करने में आन्तरिक एवं अंतर्राष्ट्रीय कारकों का महत्वपूर्ण स्थान है। विदेश नीति से संबंधित दृष्टिकोण पर नजर डालने पर पता चलता है कि अभी तक तीन प्रकार के दृष्टिकोणों की उत्पत्ति हुई है। निर्गत दृष्टिकोण सुरक्षा की दृष्टि से सबसे बड़ा बदलाव 1998 में पोखरण–2 के बाद आया। जबकि अणुशक्ति के विस्पफोट के बाद दक्षिण एशिया में शक्ति संतुलन और विदेश नीति के आधर में बदलाव देखा जा सकता है।

नेहरू के कार्यकाल में विदेश नीतिः–

भारतीयों ने राष्ट्र की विदेश नीति पर अपना नियंत्राण 1947 में ब्रिटिश उपनिवेशी शासन से आजादी मिलने के बाद ही प्राप्त किया दूसरा विश्व युद्ध के बाद दो शक्तियां उभर कर सामने आई USA तथा USSR भारत को किसी भी शक्तिशाली देश में शामिल होना जरूरी हो गया था। अगस्त 1947 में स्वतंत्रता से पहले ही सितम्बर 1946 में नेहरू के नेतृत्व में एक अंतरिम सरकार नियुक्त कर दी गई थी।

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू दुविधा में थे। पश्चिम में शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी वह व्यक्तिगत रूप से मार्क्सवादी विचारधरा की ओर आकृष्त थे। लेकिन किसी भी एक गुट के साथ मिल जाने का अर्थ या हाल ही मिली आजादी को खो देना। इस प्रकार नेहरू जी किसी भी गुट में शामिल नहीं होना चाहते थे। उन्होंने स्वतंत्र विदेश नीति का अनुसरण करते हुए गुटनिरपेक्ष नीति को अपनाया।

इस प्रकार, किसी भी सैनिक गुट के साथ गुटनिरपेक्षता नेहरू की उस दुविधा का उत्तर था। जिसका सामना स्वयं नेहरू और राष्ट्र ने किया। नेहरू की और से गुटनिरपेक्षता एक बौद्धिक तख्ता–पलट राज्य परिवर्तन था। एक तरह से यह इतिहास से प्राप्त सीख थी। गुटनिरपेक्षता से अभिप्राय विश्व की राजनीति में तटस्थता नहीं था। यह एक सकारात्मक सोच है। इसका अभिप्राय है–भारत ने अपने हितों को प्रभावित करने वाले मुद्दे पर निर्णय लेने की आजादी को बनाए रखा। संकट में किसी एक राष्ट्र का समर्थन करने के लिए कोई पूर्व प्रतिवृति नहीं थी।

नेहरू ने भारतीय गणतंत्रा को राष्ट्रमंडल का सदस्य बनाकर राष्ट्रमंडल के साथ घनिष्ठ मैत्री संबंधो को बनाए रखा। लेकिन ब्रिटेन की कश्मीर संकट को हल करने में दिलचस्पी नहीं थी। जम्मू–कश्मीर के विवाद को सुलझाने में जो अन्य शक्ति भारत की मदद कर सकती थी, वह थी अमेरिका। लेकिन 1949 में इस देश में किए जाने वाले प्रथम दौरे में नेहरू ने तत्कालीन विदेश मंत्री डीन एक्सन को निराश किया।

नेहरू भारत के राष्ट्रीय हित के बचाव में गुटनिरपेक्षता में लचीले हो सकते थे। वे अमेरिका की मदद न लेते, जो उस समय चीन–विरोधी और फिर भी अक्टूबर, 1962 के चीन–भारत युद्ध के बाद भारत की थोड़ी मदद करने के लिए आगे आया। भारत ने जम्मू–कश्मीर में पाकिस्तान के युद्ध में सोवियत संघ की राजनीतिक सहायता भले ही ली। लेकिन यह मदद भारत को बिना मांगे मिली। यदि भारत ने तिब्बत संकट के दौरान 1954 में अमेरिका से मदद मांगी होती तो 1962 में चीनी चुनौतियों का सामना करने में अमेरिका की मदद ज्यादा प्रभावशाली और बड़ी हो सकती थी। इससे गुटनिरपेक्षता को एक सही छवि मिलती। इससे सिद्ध हो जाता कि गुटनिरपेक्षता ने एक देश को दूसरे देश की तब सहायता लेने दी जब उसकी सुरक्षा खतरे में थी।

नेहरू के बाद विदेश नीतिः– नेहरू का 1964 में देहांत हो गया। उसके बाद लाल बहादूर शास्त्री देश के दूसरे प्रधनमंत्राी बने। शास्त्री जी का कार्यकाल कम समय के लिए ही रहा। क्योंकि पाकिस्तान के सैनिक तानाशाह अयूब खां के साथ ताशकंद समझौते पर हस्ताक्षर करने के बाद जनवरी 1966 में ताशकंद में शास्त्री की मृत्यु हो गई।

भारत की विदेश नीति में शास्त्री को उनके द्वारा लाए गए प्रमुख परिवर्तन के रूप में याद किया जाता है। उन्होंने अंतर्राष्ट्रीय घटनाओं पर ज्यादा ध्यान देने की बजाए अपने रूख को मोडकर भारत के नजदीक पडोसी देशों पर ज्यादा ध्यान दिया। शास्त्री, नेहरू के व्यक्तित्व तथा अंतर्राष्ट्रीय संबंधो से बहुत अधिक प्रभावित थे। शास्त्री ने पड़ोसी देशो की और ध्यान दिया। इसके पीछे उनका लक्ष्य दक्षिण एशिया के भीतर संबंधो को सुधारना था। प्रधनमंत्री शासी के समक्ष जो अन्य मुख्य संकट आया वह था 1965 का भारत–पाकिस्तान युद्ध था। इस युद्ध की कार्य प्रणाली 1947–48 में हुए प्रथम युद्ध जैसी ही थी। इस युद्ध में पाकिस्तान जम्मू और कश्मीर के कुछ भू–भाग पर कब्जा करने में सफल रहा। जबकि भारतीयों ने दूसरी सीमा–लाहौर की और बढ़ाने के लक्ष्य को चुना।

श्रीमती इंदिरा गांधी का कार्यकालः–

लाल बहादुर शास्त्री के बाद श्रीमती इंदिरा गांधी ने प्रधनमंत्री का पद संभाला। नेहरू के बाद प्रधनमंत्री का लंबा कार्यकाल इंदिरा का ही रहा। 1970 के चुनावों के बाद, श्रीमती गांधी देश में अपनी सत्ता को सुदृढ़ कर पाई। उनके कार्यकाल में प्रमुख विदेशी नीति संबंधी घटना बाग्लादेश युद्ध था। जो 1971 में पाकिस्तान के साथ लड़ा गया था। राजनीति के खेल में निपुण श्रीमती गांधी ने पूर्वी पाकिस्तान में हुई मानव त्रासदी के बारे में नेताओं को सूचित करने के लिए पश्चिमी देशों का दौरा किया। उस समय अमेरिका गुप्त रूप से चीन के साथ संबंध स्थापित करने के लिए राह बनाने में व्यस्त था। जिसमें पाकिस्तान ने मध्यस्थ के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी समय श्रीमती इन्दिरा गांधी सेना को सैनिक हस्तक्षेप के लिए तैयार रहने को भी कह चुकी थी। सेना चाहती थी कि यह हस्तक्षेप सर्दियों में हो, क्योंकि हिमालय की घाटियों पर बर्फ गिर जाएगी और पाकिस्तान और चीन इस संबंध में सैनिक रूप से हस्तक्षेप नहीं कर सकेगा।

इन्दिरा गांधी का विदेश नीति का सबसे अच्छा उदाहरण 1971 में पाकिस्तान से अलग बंग्लादेश बनाने में जो सहयोग था वह अत्यंत चुनौतीपूर्ण था।

1971 के बांग्लादेश युद्ध से पूर्व भारत ने सोवियत संघ के साथ शांति और मैत्री संधि पर हस्ताक्षर किए थे। संधि के अंतर्गत यदि दोनों में से किसी भी देश को सैनिक चेतावनी का सामना करना पड़ता है तो उस हालात में दोनो 'तत्काल परस्पर परामर्श करेंगे' और समुचित प्रभावशाली तरीके अपनाएंगे।

शिमला समझौताः– 1971 के भारत पाक युद्ध की समाप्ति श्रीमती इन्दिरा गांधी और मुटटो के बीच शिमला समझौते पर हस्ताक्ष्र हुई। समझौते के तहत दोनों देशो ने अपने मतभेदों को शांतिपूर्ण तरीको से द्विपक्षीय वार्ताओं के जरिए निपटाने का निर्णय लिया। बांग्लादेश में युद्ध के दौरान बंदी बनाए गए बंदियों को आजादी की सुरक्षित कर ली।

1974 का परमाणु परीक्षणः– राष्ट्र को प्रमुख शक्ति की राह पर ले जाने मे श्रीमती इन्दिरा गांधी के दृढ़ निश्चय के लिए भी भारत उन्हे याद रखेगा। शक्ति के प्रति पंडित नेहरू का दृष्टिकोण आदर्शवादी था। लेकिन श्रीमती गांधी काफी हद तक यथार्थवादी थी। उनके ऐसे कार्यो में एक कार्य था मई 1974 पोखरण में परमाणु परीक्षण करवाना।

शोध प्रविधिः– भारत –अमेरिका संबंध, भारत–रूस संबंध, भारत–चीन संबंध, भारत–जापान, भारत–श्रीलंका, मालदीव, भारत–भूटान।

अमेरिका के साथ भारत के संबंधः–

आज कि अंतर्राष्ट्रीय स्थिति में विश्व की अनेक बड़ी शक्तियों में अमेरिका और यूरोपीय संघ का विशिष्ट स्थान है। सोवियत संघ के विघटन के बाद अमेरिका विश्व की एकमात्र महाशक्ति है। इसके पास ऐसी सैनिक क्षमताएं है, जिनसे वह समूचे संसार को नष्ट कर सकता है। साथ ही, यह विश्व का सबसे सम्पन्न राष्ट्र है। अमेरिका सैनिक शक्ति तथा आर्थिक रूप से सुदृढ़ राष्ट्र है। भारत और अमेरिका के बीच रिश्ते वैसे सद्भावपूर्ण नहीं रहे है जैसे कि विश्व के दो महान लोकतांत्रिक देशो के बीच होने चाहिए। फिर भी बीसवीं शताब्दी की समाप्ति के बाद से दोनों देश एक–दूसरे के करीब आए। हालांकि पाकिस्तान के प्रति अमेरिका का झुकाव अभी भी बरकरार है। जबकि भारत हर संभव प्रयास करने के बावजूद पाकिस्तान के साथ अच्छे रिश्ते नहीं हो सकें है। भारत ने वर्तमान समय में यूरोपीय संघ के साथ धीरे–धीरे करीबी और मैत्रीपूर्ण संबंध विकसित कर लिए है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने न केवल दो शक्तिशाली गुटों में से किसी भी गुट में शामिल नहीं होने का फैसला किया। बल्कि गुट–निरपेक्षता की नीति अपना ली। अमेरिका ने जब भी सैनिक गुटो तथा सुरक्षा संगठनों का गठन को बढ़ावा दिया। भारत ने उनका विरोध किया। भारत 'दक्षिण पूर्व एशिया संधि संगठन' (सिएटो) और 'मध्य संधि संगठन' (सेंटो) के गठन का विशेष रूप से आलोचक रहा।

कश्मीर समस्याः– 1947 में पाकिस्तान से कश्मीर की लगते क्षेत्र पर पाकिस्तान ने कब्जा कर लिया। जिससे कश्मीर समस्या शुरू हो गई। आजादी के तुरन्त बाद ही पाकिस्तान और भारत का विवाद शुरू हो गया। उस समय कश्मीर के राजा हरिसिंह ने कश्मीर का भारत में विलय पर हस्ताक्षर हो गया। इस समय अमेरिका ने भारत की सहायता करने की बजाय पाकिस्तान की सैनिक हथियारों से सहायता की संयुक्त राष्ट्र के उस प्रस्ताव का समर्थन किया। जिसमें हमले की निन्दा नहीं की गई। भारत ने शिकायत की कि अमेरिका ने अपनी

नीति के जरिए आक्रामक और आक्रांत को एक तराजू पर तोला है। 1965 में पाकिस्तान के दूसरे आक्रमण के समय भी अमेरिका ने इसी तरह का रवैया अपनाया। 1971 में भारत विजय के बाद अमेरिका शिमला समझौते का समर्थन करने लगा।

परमाणु मसलेः– 1964 में चीन के परमाणु शक्ति बन जाने के बाद से ही भारत अमेरिका संबंधों मे परमाणु समस्या ने प्रमुख स्थान ले लिया। अमेरिका को शक था कि भारत भी चीन का अनुसरण करते हुए अपना बम तैयार कर लेगा। जिससे परमाणु शस्त्रों के प्रसार में और वृद्धि होगी। अमेरिका ने कई देशों के साथ मिलकर परमाणु प्रसार की रोकथाम की दिशा में प्रयास शुरू कर दिए। 1968 में परमाणु अप्रसार संधि पर हस्ताक्षर किए गए। भारत ने इसमें शामिल होने से इंकार कर दिया कि इस संधि में उन देशों के साथ भेदभाव किया गया है जो परमाणु हथियारों से सम्पन्न नहीं है। इस भेदभावपूर्ण संधि को नकारते हुए भारत ने 1974 में शांतिपूर्ण परमाणु विस्पफोट (पी.एन.ई.) कर दिया। जिससे भारत और अमेरिका के रिश्तों में एक बार फिर राजनीतिक खटास आ गई।

वर्तमान में भारत–अमेरिका की स्थितिः– भारत की सोवियत संघ से नजदीकी होने के कारण अमेरिका और भारत के संबंध शुरू से ही खराब रहे है। पर 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद भारत और अमेरिका के संबंधे में सुधरा आया और वर्तमान में भारत और अमेरिका के संबंध काफी अच्छे है। किसी भी देश के साथ किसी दूसरे देश के संबंध कैसे है ये उस समय की राजनीतिक स्थिति पर निर्भर करता है। उदाहरण के लिए आज भारत के प्रधनमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी तथा अमेरिका के राष्ट्रपति वाइडेन दोनों के संबंध काफी घनिष्ठ है। दोनों देश मित्र की तरह कार्यरत है। ये दोनों नेता ऐसी परियोजना लाने वाले है जिससे दोनों देशों की नजदीकी और भी बढ़ने है।

भारत और अमेरिका के संबंधें की विशेषताएंः–

- भारतीय सॉफटवेयर निर्यात का 65 प्रतिशत अमेरिका को दिया जाता है।
- अमेरिका कंपनी बोईंग के 35 प्रतिशत कर्मचारी भारतीय है।
- 3 लाख से ज्यादा भारतीय सिलिकौन वाली में कार्यरत है।
- अमेरिका कंपनियों में भारतीयों का अत्यधिक योगदान है।

भारत–रूस संबंधः– रूस, चीन और जापान विश्व की तीन बड़ी शक्तियां है। जिन्हें उनकी भौगोलिक स्थिति के कारण एशियाई शक्तियां भी माना जा सकता है। चीन और जापान तो पूरी तरह से एशियाई देश है जबकि रूस यूरो–एशियाई देश है। इन तीनों देशों का महत्व अमेरिका जैसा तो नहीं है परन्तु रूस के पास इतनी अधिक सैन्य क्षमता है कि वह अमेरिका की सुरक्षा के लिए खतरा पैदा कर सकता है। भारत के रूस से साथ गहरे रक्षा संबंध रहे है।

विश्व के आधुनिक मानचित्र पर रूस एक नया देश है जो लगभग दस वर्ष पुराना है। रूस को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में स्थायी स्थान दिया गया। ब्रिटिश आधिपत्य से मुक्ति के बाद शुरूआती वर्षो में सोवियत संघ के साथ भारत के संबंध बहुत अच्छे नहीं रहे। सोवियत संघ ने भी नए–नए स्वतंत्र हुए देश भारत के साथ रिश्ते बनाने की इच्छा नहीं जताई। परन्तु विश्व भर में महाशक्तियों की प्रतिद्वंद्विता बढने के कारण सोवियत संघ को भारत के साथ अपने रिश्तों पर पुनर्विचार करना पड़ा। जिसके बाद में गुटनिरपेक्ष विदेश नीति को अपनाया। परन्तु भारत–सोवियत संबंधे में अधिक मजबूती 1962 के भारत–चीन युद्ध के बाद आई। चीनी आक्रमण के समय गुटनिरपेक्ष भारत के साथ सोवियत संघ के कोई सामरिक रिश्ते तो नहीं थे, परन्तु तब तक सोवियत संघ और चीन के संबंधों में दरार जगजाहिर हो चुकी थी। 1962 में दोनों देशों के बीच सैनिक–तकनीकी सहयोग का एक कार्यक्रम शुरू करने पर सहमति हुई।

सोवियत संघ के विघटन के पश्चात उभरे तनावः– सोवियत संघ के विघटन और रूस के उदय के साथ विदेश नीति के परंपरागत उद्देश्यों ओर लक्ष्यों में कई बदलाव आए। पहला कारण है कि राष्ट्रपति बोरिस येल्तसिन ने रूस की विदेश नीति को विचार धारा से मुक्त करने पर जोर दिया। जिसके फलस्वरूप भारत के प्रति 'देखो और प्रतिक्षा करो' की नीति अपनाई गई। भारत के साथ नए संबंध व्यवहारिक और लचीलेपन पर आधारित थे और उनमें भारत के लिए अधिक समय देने की गुंजाईश नहीं थी।

दूसरा कारण है कि भारत के साथ संबंधो के बारे में रूस के विदेश मंत्री एंडेई कोजीरेफ के नेतृत्व में नए चिंतको का गुट सामने आया। जिनकी नजर में रूस की विदेश नीति और सुरक्षा संबंधी उद्देश्य प्राप्त करने के लिए पाकिस्तान अधिक महत्वपूर्ण था।

निकट सहयोग का दौर फिर लौटाः– कुछ समय में ही रूस को महसूस होने लगा कि मार्शल योजना के अंतर्गत पश्चिम से सहायता लेने की उसकी आशाएं सही नहीं थी। नाटो के विस्तार, बालकन संकट और अमेरिका घौंसपट्टी की कई अन्य घटनाओं को देखकर रूस को अपनी विदेश नीति पर नए सिरे से विचार करना पड़ा। एक समय पर जब अमेरिकी राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने परमाणु मसले पर भारत पर दबाव बनाया तो रूस ने भारत को परमाणु आपूर्तिकर्ताओं के गुट के प्रतिबंध की अवहेलना करते हुए दो रूसी हल्के जल के परमाणु रिएक्टर बनाने का समझौता करके दोस्ती का नया संकेत दिया। इस समझौते से तमिलनाडु में कुंडनकलम में 1000 मेगावाट क्षमता के हल्के जल के दो परमाणु रिएक्टरों के निर्माण का रास्ता साफ हो गया। ऐसा लगा कि रूस इस बार बाहरी दबाव की परवाह नहीं करेगा। 1998 में रूस ने परमाणु परीक्षण के लिए भारत की हालांकि निंदा की, परन्तु उसके खिलाफ प्रतिबंध नहीं लगाए। 1999 के कारगिल युद्ध में रूस ने भारत का पूर्ण समर्थन किया और पाकिस्तान से अपनी सेनाएं नियंत्रण रेखा से अपनी तरफ बुला लेने को कहा। राष्ट्रपति पुतिन ने सीमा पास आंतकवाद के सवाल पर वाजपेयी सरकार का पूरा समर्थन करते हुए पाकिस्तान से आंतकवाद का पूरा ढांचा नष्ट करने का अनुरोध किया।

भारत तथा भूटान के संबंधः– भूटान हिमालय क्षेत्रा का एक छोटा राज्य है। यह प्रभुता सम्पन्न देश है। हालांकि दोनों देशो की परस्पर सहमति से भारत अपने छोटे पडोसी देश की सुरक्षा से संबंध है। भारत और भूटान 1949 की द्विपक्षीय संधि के अनुसार मैत्रीपूर्ण संबंधो को स्थापित किए हुए है। भारत भूटान का ऐसा मार्गदर्शन करता है जिससे कि विदेशी संबंधो के मामलों में भूटान भारत का मार्गदर्शन मांग सके। भारत–भूटान दोनों देश सार्क के सदस्य है। दोनो देश गुटनिरपेक्ष की नीति के जरिए एक–दूसरे से घनिष्ठ रूप से जुडे हुए है।

2020 में भारत ने 600 मेगावाट जलविद्युत परियोजना के लिए भूटान के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किए है। भूटान के लोग बौद्ध धर्मावलम्बी है। यदि चीन इस क्षेत्र में घुसपैठ करे तो न केवल भूटान बल्कि उत्तरी बंगाल, असम व अरूणाचल प्रदेश को भारत से काट सकता है। सौभाग्य से दोनों के संबंध मित्रतापूर्ण रहे है। 1977 में भारत ने भूटान के दूतावास का दर्जा बढ़ाया।

निष्कर्षः–

दक्षिण एशिया के साथ भारत के घनिष्ठ संबंध है। ये एक–दूसरे के साथ जुड़े हुए है। दक्षिण एशिया पर भारत का प्रभाव इतना अधिक है कि कुछ भारतीय उसे भारत का क्षेत्र मानने की गलती करते है।

अंत में, भारत द्वारा दक्षिण एशिया के देशों के साथ अच्छे पडोसियों जैसे संबंध विकसित करने के कारण उसे आर्थिक और सामरिक दृष्टि से लाभ मिल रहा है। इसे भारत की संसद का और इस क्षेत्र सभी देशों का समर्थन प्राप्त है। इससे एशिया 109 प्रशांत क्षेत्रा लोकतंत्र, मुक्त व्यापार और भूमंडलीकरण का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन कर उभर सकेगा।

संदर्भ सूचीः–

1. https://politicalweb.in
2. http://mduddc.net
3. https://pwonlyias.com
4. पी.सी. जैन
5. जे.एन. दीक्षित
6. राजेश मिश्रा, आर.एस. यादव